धर्मेन्द्रकुमार

बी० ए० I
समाज शास्त्र

PAGE NO.
DATE: 25/1/2022

# सामाजिक संस्थाएँ - परिवार

प्राणीशास्त्रीय सम्बन्धो के आधार पर बने समूहो में परिवार सबसे छोटी इकाई है अनेक समाजशास्त्री का मत है कि परिवार समाज रूपी भवन के कोने का प्रत्थर है। यह सामाजिक संगठन की मौलिक इकाई है परिवार के अभाव में मानव समाजके संचालन की कल्पना भी करना कठिन प्रतीत होती है।

## परिवार का अर्थ

'Family' शब्द का उद्गम लैटिन शब्द Famulus से हुआ है, जो एक ऐसे समूह के लिए प्रयुक्त हुआ है। जिसमें माता पिता, बच्चे नौकर और दास हो, साधारण अर्थो में, विवाहित जोडे को परिवार की संज्ञा दी जाती है।

## परिवार का परिभाषा —

मैकाइवर एव पेज के अनुसार — "परिवार प्रर्याप्त निश्चित

यौन सम्बन्ध द्वारा परिभाषित एक ऐसा समूह है जो बच्चों के जनन एवं लालन पालन की व्यवस्था करता है।"

लूसी मेयर के अनुसार — "परिवार एक गार्हस्थ्य समूह है जिसमें माता-पिता और संतान साथ-साथ रहते हैं। इसके मूल रूप में दम्पति और उनकी संतान रहती है।"

श्या० दुबे के अनुसार — "परिवार में स्त्री और पुरुष दोनों की सदस्यता प्राप्त रहती है उनमें से कम से कम दो विपरीत यौन व्यक्तियों को यौन सम्बन्धों की सामाजिक स्वीकृति रहती है और उनके संसर्ग से उत्पन्न संतान मिलकर परिवार का निर्माण करते हैं।"

परिवार की विशेषताएँ —

सार्वभौमिकता — परिवार की उपस्थिति सार्वभौमिक है कोई भी समाज चाहे वह आधुनिक हो या प्राचीन

PAGE NO.
DATE: / /

शहरी हो या ग्रामीण स्त्री में परिवार देखने को मिलेगा। प्रत्येक मनुष्य किसी न किसी परिवार का सदस्य रहा है और भविष्य में भी रहेगा।

**भावात्मक आधार** — परिवार के सदस्य परस्पर भावात्मक बन्धनों में बंधे होते हैं माता-पिता एवं बच्चों के बीच त्याग एवं वात्सल्य की भावना पायी जाती है पति-पत्नि के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।

**रचनात्मक प्रभाव** — मनुष्य जन्म लेने के बाद परिवार के सम्पर्क में ही आता है परिवार के सदस्यों का नवजात शिशु पर गहरा प्रभाव पड़ता है। परिवार व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं चरित्र-निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया